दिनांक :- 23-04-2020

कॉलेज का नाम:- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम:- डॉ०-फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड कला
विषय :- इतिहास प्रतिष्ठा
पत्र :- चतुर्थ
इकाई :- दो
अध्याय:- द्वितीय अफीम युद्ध (1856)

26 जून, 1843 को सम्राट ने सीमा शुल्क की दरें एक उद्घोषणा द्वारा जारी की। इस समय से लेकर 1930 तक चीन अपने इच्छानुसार सीमा-शुल्क की दरों में परिवर्तन करने के लिए स्वतंत्रता नहीं था।

1842 में विदेशियों से सीधे संबंध रखने के लिए उपयुक्त बन्दरगाहों पर एक महत्वपूर्ण अधिकारी की नियुक्ति की गई जिसे तानो-ताई कहते थे। उसका अधिकार क्षेत्र दो या दो से अधिक विदेशी व्यापारिक संस्थानों पर था। सीमा शुल्क कार्यालय का

Scanned with CamScanner

का निरीक्षण भी उसके अधीन हो था। चीनी प्रशासन के कुछ सीमा शुल्क पदाधिकारी अयोग्य और भ्रष्ट थे तथा विदेशी व्यापारी इन अधिकारियों की सहायता से सीमा शुल्क देने से बचने की कोशिश करते थे। अतः एक विशिष्ट व्यवस्था का जन्म हुआ। ताओ-ताई और तीन संधिगत राष्ट्रों (इंग्लैंड अमरीका एवं फ्रांस) के बीच 29 जून, 1858 को एक समझौता हुआ। जिसके अनुसार सीमा शुल्क संबंधी विदेशी निरीक्षणालय की स्थापना हुई। इस निरीक्षणालय के अधिकारियों की नियुक्त का अधिकार इन तीन देशों के वाणिज्य दूतों को दिया गया। सभी प्रकार के आयात-निर्यात पर पश्चिम के व्यापारियों का नियंत्रण हो गया। फलतः चीनी में अधिकारक्षेत्र को लेकर दोनों ओर के अधिकारियों में अनेक मतभेद थे।

(2) राज्यक्षेत्रातीत अधिकार - विदेशी व्यापारियों तथा नाविकों ने संधि के अंतर्गत राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों का दुरुपयोग

किया। इस अधिकार के अंतर्गत पश्चिमी देशों का यह नैतिक कर्तव्य था कि वे अपने-अपने संस्थानों में उद्दण्ड तथा उपद्रवी नाविकों से संधि के अन्तर्गत राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों का दुरुपयोग किया। इस अधिकार के अंतर्गत पश्चिमी देशों का यह नैतिक कर्तव्य था कि वे अपने-अपने संस्थानों में उद्दण्ड तथा उपद्रवी नाविकों और बेईमान व्यापारियों को दंड देने के लिए न्यायालय और कारागार की व्यवस्था करते। परंतु उन्होंने इसकी उपेक्षा की। यद्यपि 1843 में ब्रिटिश संसद ने कानून पारित करके ब्रिटेन का न्यायिक अधिकार-क्षेत्र विदेशी भूमि तक बढ़ा दिया था, तथापि इसका कोई व्यावहारिक रूप नहीं था। अन्य देशों ने तो ऐसा भी नहीं किया। फलतः चीन में अपराध कर्मी विदेशी स्वच्छन्द घूमते थे जो चीनी प्रशासन के लिए सर दर्द थे।

(3) अफीम का व्यापार - 1842 के बाद चीन में अफीम का व्यापार बढ़ गया। चीनी कानून के अनुसार अफीम के आयात पर

पूर्ण प्रतिबन्ध था. परंतु पश्चिम के व्यापारी 1840 से 1859 के बीच चीन में अफीम का वार्षिक आयात 300 प्रतिशत बढ़ गया था। लंदन के प्रमुख समाचार पत्र 'दि टाइम्स' के संवाददाता ने लिखा था। आजकल अफीम का व्यापार चीन के सभी नगरों में इतना उन्मुक्त तथा अबाध है जितना गुड फ्राइडे को लंदन की सड़कों पर गर्म-गर्म बन्द रोटी (डबल ब्रेड) का व्यापार मंचू सरकार इस अफीम व्यापार से चिन्तित थी। चीन की आर्थिक स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही थी।

(5) संधियों की पुनरावृत्ति की माँग - शंघाई तथा अन्य उन्मुक्त बन्दरगाहों पर विदेशी व्यापार का विकास तेजी से हुआ। लेकिन अल्प समय में ही यह स्पष्ट हो गया कि चीन और संधिगत राष्ट्रों के संबंध सद्भावपूर्ण कदापि नहीं है। अमरीका से हुई संधि की पुनरावृत्ति 12 वर्ष पश्चात् होनी थी। ब्रिटिश सरकार को बोग की संधि द्वारा सर्वाधिक प्रियराष्ट्र की जो

विशेष सुविधा प्राप्त हुई थी। उसी आधार पर ब्रिटेन ने 1854 मे चीनी सरकार को स्पष्ट कर दिया कि नानकिंग की संधि पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। अंग्रेज व्यापारी अफीम के व्यापार को वैध कराना चाहते थे। अतः पश्चिमी राष्ट्र संधियों का नवीनीकरण कराने के लिए अत्यंत उत्सुक थे, चाहे इसके लिए उन्हे शक्ति-प्रदर्शन ही क्यों न करना पड़े।

(5) कैथोलिक धर्म प्रचारक की हत्या:- 1856 मे क्वांगसी मे फ्रांसीसी कैथोलिक धर्म प्रचारक आबे-चैपडलेन को बन्द बना लिया गया उस पर विद्रोहात्मक उत्तेजित कार्रवाई करने का आरोप लगाया गया। उसे फरवरी, 1856 मे मृत्यु दंड दिया गया। जब ये खबर कैंटन पहुँची, तब इससे पश्चिमी देशों के व्यापारियों मे बड़ी उत्तेजना फैल गई। उन्होंने चीन के इस कार्य को अपने राज्यक्षेत्रातीत अधिकार की अवज्ञा बतलाया। इसलिए इस घटना के तुरंत बाद फ्रांस ने इंग्लैंड के शक्ति प्रयोग मे सहायता

Scanned with CamScanner

देने की तत्परता दिखलाई।

(6) लौर्चा ऐरो कांड - द्वितीय अफीम युद्ध का तात्कालिक कारण लौर्चा ऐरो (Lorcha Arrow) नामक जहाज पर चीनी अधिकारियों द्वारा कुछ समुद्री दस्युओं (Pirates) को गिरफ्तार कर लिया जाना था। इस जहाज का मालिक हुंगकांग में रहने वाला एक चीनी मल्लाह था जो अपने आपको ब्रिटिश नागरिक कहता था। पश्चिम में व्यापारी अपनी व्यापारिक सुविधा के लिए अनेक चीनी जहाजों का प्रयोग करते थे तथा कैंटन और अन्य बन्दरगाहों पर आने-जाने के लिए अनेक चीनी जहाजों का प्रयोग करते थे। तथा पार-पत्र देते थे। चीनी अधिकारियों ने इस व्यवस्था की अनुमति दे दी थी। धीरे-धीरे इस अनुमति का दुरुपयोग किया जाने लगा। कुछ जहाज ब्रिटिश पताका की सुरक्षा में तस्कर व्यापार (Smuggling) करने लगे। बहुत से जहाज बिना अनुमति के ही विदेशी राष्ट्रों की पताका रखने लगे। चीनी अधिकारियो

के लिए पहचान करना कठिन हो गया है कि कौन-सा देश जहाज विदेशी पताका का अवैध उपयोग कर रहा है और कौनसा वैध।
18 अक्टुबर, 1856 को जब लोर्चा ऐरो कैंटन में लंगर डाले खड़ा था, चीनी पुलिस दल ने उस पर छापा मारकर चालक मंडल (Crews) के 14 सदस्यों में से 12 को समुद्री लूट (Piracy) के अभियोग में गिरफ्तार कर लिया ब्रिटिश पताका वाणिज्य दूत हैंरी मार्क्स ने बंदी चालकों की रिहाई की तुरंत माँग की उसका कहना था कि ऐरो जहाज हांग-कांग में पंजी कृत हुआ था और उस पर ब्रिटिश पताका लगी हुई थी। जिसे चीनी अधिकारियों ने बिना अनुमति के उतार कर संपूर्ण ब्रिटिश पताका लगी हुई थी जिसे चीनी अनुमति को ठुकरकर संपूर्ण ब्रिटिश राज्यका अपमान किया। वाणिज्य अधीक्षक सर जॉन बाउरिंग ने मार्क्स का समर्थन किया और चीनी सरकार से क्षमता-प्रार्थना तथा भविष्य के लिए समुचित आश्वासन की माँग की।

Scanned with CamScanner